E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 13-04-2025
Accepted: 21-06-2025

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 3; 2025; Page No. 95-99

वैश्विक महामारी (Covid-19) के बाद इतिहास का बदलता स्वरूप एवं परिदृश्य

[1]Pradeep Shukla and [2]Amar Kumar Bharati

[1]Professor, Department of History, Guru Ghasidas University Bilaspur, Chhattisgarh, India
[2]Research Scholar, Department of History, Guru Ghasidas University Bilaspur, Chhattisgarh, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.16366017

Corresponding Author: Amar Kumar Bharti

Abstract

कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी ने संपूर्ण मानव समाज को एक अप्रत्याशित और गहरे संकट में डाला, जिसने न केवल स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक ढांचे को प्रभावित किया, बल्कि सामाजिक ताने-बाने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैश्विक राजनीतिक संरचनाओं को भी बदलकर रख दिया। इस महामारी ने मानव जाति को यह सोचने पर विवश कर दिया कि हमारी आधुनिक व्यवस्थाएं कितनी नाजुक और असुरक्षित हैं। कोविड-19 ने न केवल वर्तमान को ही चुनौती दी, बल्कि अतीत की घटनाओं, सभ्यताओं के उत्थान-पतन और उनके मूल्यांकन की पद्धतियों को भी एक नवीन दृष्टिकोण से देखने के लिए विवश किया। इतिहास का पारंपरिक दृष्टिकोण जिसमें युद्ध, शासक और राजनीतिक घटनाएं ही प्रमुख रहती थीं, अब जैविक और सामाजिक संकटों के आलोक में पुनः मूल्यांकित किए जा रहे हैं। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कोविड-19 के व्यापक प्रभावों के संदर्भ में हम इतिहास को किस प्रकार एक नए परिप्रेक्ष्य से देख सकते हैं, जिसमें महामारी जैसी घटनाएं केवल सामाजिक स्वास्थ्य संकट नहीं बल्कि संभावित सभ्यता-परिवर्तनकारी कारक भी बन सकती हैं। विशेष रूप से जब हम सिंधु घाटी जैसी प्राचीन और विकसित सभ्यता के पतन को महामारी जैसी आपदाओं के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करते हैं, तो यह हमारे ऐतिहासिक अध्ययन को और अधिक समग्र और वैज्ञानिक बनाता है। इस शोध का लक्ष्य इतिहास लेखन के स्वरूप में उस परिवर्तन को उजागर करना है, जो कोविड-19 के अनुभवों के आलोक में उत्पन्न हुआ है।

Keywords: महामारी, कोविड-19, सिंधु सभ्यता, सभ्यता का पतन, प्रवास, वैश्वीकरण, ऐतिहासिक संशोधनवाद, महामारी।

Introduction

इतिहास केवल युद्धों, सम्राटों और विजयों की श्रृंखला भर नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता की समग्र यात्रा का वह दर्पण है, जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और जैविक कारक समान रूप से प्रतिबिंबित होते हैं। समय-समय पर आई महामारियों, प्राकृतिक आपदाओं और जैविक संकटों ने इतिहास को नई दिशा दी है। कोविड-19 वैश्विक महामारी ने यह साक्षात् सिद्ध कर दिया है कि केवल राजनीतिक परिवर्तन ही नहीं, बल्कि जैविक संकट भी मानव इतिहास की गति को बदलने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इसने मानव समाज की जीवनशैली, शिक्षा प्रणाली, आर्थिक ढाँचे और राजनीतिक व्यवस्थाओं को गहराई से प्रभावित किया है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि हम इतिहास को केवल राजनैतिक घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में न देखकर व्यापक दृष्टिकोण से समझें। इतिहास की परंपरा में जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो हमें यह ज्ञात होता है कि अनेक प्राचीन और विकसित सभ्यताएं – जैसे मिस्र, मेसोपोटामिया, रोम और सिंधु घाटी – प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तनों, और महामारी जैसी घटनाओं के कारण अपने उत्कर्ष से अपकर्ष की ओर अग्रसर हुईं। इस प्रकार के संकटों ने न केवल जनसंख्या को प्रभावित किया, बल्कि समाज की संरचना, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य प्रणाली, व्यापार

मार्गों और सांस्कृतिक मूल्यों पर भी गहरा प्रभाव डाला। कोविड-19 के पश्चात इतिहास लेखन की प्रवृत्ति में भी परिवर्तन देखा गया है, जिसमें महामारी विज्ञान और स्वास्थ्य इतिहास को गंभीरता से लिया जा रहा है।

सिंधु घाटी सभ्यता और महामारी: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन

सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2600-1900 ई.पू.) प्राचीन विश्व की सबसे समृद्ध, सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक दृष्टि से उन्नत सभ्यताओं में से एक थी। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा और राखीगढ़ी जैसे नगरों की सुनियोजित नगर व्यवस्था, जल निकासी प्रणाली, सामाजिक समानता, व्यापारिक संबंध तथा लिपि की समृद्धि इसके उत्कर्ष के प्रमाण हैं। परंतु यह सभ्यता अचानक ही लुप्तप्राय हो गई, जिसके पीछे विभिन्न कारणों की व्याख्या की गई है।

1. जलवायु परिवर्तन एवं बाढ़

अनेक पुरातात्विक अनुसंधानों से यह संकेत मिला है कि सिंधु नदी प्रणाली में समय के साथ बड़े स्तर पर परिवर्तन हुआ। विशेषतः गग्गर-हकरा (जिसे कुछ विद्वान सरस्वती नदी से जोड़ते हैं) के सूखने और बार-बार आने वाली बाढ़ों ने कृषि व्यवस्था को भारी क्षति पहुँचाई। इससे जनसंख्या विस्थापन हुआ और स्थायी नगरीय जीवन संकट में पड़ गया। डॉ. ग्रेगोरी पॉट्स और डॉ. रीटा राइट जैसे पर्यावरण-पुरातत्ववेत्ताओं ने भी पर्यावरणीय असंतुलन को सभ्यता के पतन से जोड़ा है।

2. आक्रमण का सिद्धांत

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में यह मत प्रचलित हुआ कि आर्यों के आक्रमण के कारण सिंधु घाटी सभ्यता का विनाश हुआ। इतिहासकार मॉर्टिमर व्हीलर ने मोहनजोदड़ो में पाई गई "हत्या की स्थिति" वाली अस्थियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि आर्यों ने इस सभ्यता पर आक्रमण किया। परंतु आधुनिक इतिहासकार जैसे रोमिला थापर, इरावती कर्वे, और बी.बी. लाल ने इस मत पर प्रश्न उठाए हैं। वे इसे एक सांस्कृतिक संक्रमण मानते हैं, न कि केवल सैन्य आक्रमण का परिणाम।

3. संभावित महामारी और जैविक संकट

हालांकि प्रत्यक्ष प्रमाण कम हैं, परंतु कुछ पुरातत्ववेत्ताओं और जीवविज्ञानियों का मानना है कि सिंधु घाटी की अत्यधिक जनसंख्या, जल निकासी की जटिल संरचना और व्यापारिक संपर्कों के चलते वहां संक्रामक रोगों के फैलने की आशंका अधिक थी। जलजनित बीमारियाँ और महामारी भी इसके पतन में सहायक हो सकती हैं, जैसा कि कोविड-19 ने वर्तमान में सिद्ध किया है। जैसे-जैसे नई तकनीकों (जैसे डीएनए विश्लेषण और आर्कियोमाइक्रोबायोलॉजी) से शोध आगे बढ़ रहा है, यह संभावना बलवती होती जा रही है कि सिंधु घाटी का अंत बहु-कारकीय था, जिसमें जैविक संकट भी शामिल थे।

3. महामारी: सभ्यता के पतन का एक संभावित कारण

कुछ प्रमुख पुरातात्विक स्थलों जैसे मोहनजोदड़ो, हड़प्पा और कालीबंगा से प्राप्त बड़े पैमाने पर मानव कंकालों के समूह, विशेष रूप से नगरीय क्षेत्रों में, इस संभावना की ओर संकेत करते हैं कि वहां किसी व्यापक जैविक संकट या महामारी ने जनसंख्या को प्रभावित किया होगा। डॉ. ग्रेगरी पोसेल (Possehl, 2002) ने इस बात पर बल दिया है कि इस प्रकार की असामान्य मृत्यु दर महामारी की उपस्थिति का संकेत हो सकती है, जो उस समय की चिकित्सा प्रणाली द्वारा नियंत्रित नहीं की जा सकी। ऐसे संक्रामक रोग, विशेषतः जलजनित बीमारियाँ और वायरस, सीमित नगरों में तीव्रता से फैल सकते थे क्योंकि नगर नियोजन अत्यधिक केंद्रीकृत और घनी बस्ती वाले थे।

प्राचीन सभ्यताओं में महामारी का उल्लेख भले ही प्रत्यक्ष रूप में कम हुआ हो, परंतु इनके अप्रत्यक्ष प्रभावों – जैसे नगरीय जीवन के विनाश, व्यापार के अवरोध, धार्मिक एवं सामाजिक रीति-रिवाजों में परिवर्तन, और जनसंख्या में तेज गिरावट – को नकारा नहीं जा सकता।

सिंधु सभ्यता और कोविड-19: एक तुलनात्मक विश्लेषण

यह ऐतिहासिक सत्य है कि चाहे वह सिंधु घाटी सभ्यता हो या आधुनिक वैश्विक व्यवस्था, जब कोई महामारी फैलती है, तो वह न केवल स्वास्थ्य संकट उत्पन्न करती है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को भी गंभीर रूप से बाधित करती है।

1. वैश्विक व्यापार का ठप होना

सिंधु घाटी सभ्यता का विदेशी व्यापार मेसोपोटामिया और फारस की खाड़ी के देशों के साथ व्यापक रूप से फैला हुआ था। यदि किसी महामारी या संक्रामक रोग ने व्यापारिक मार्गों को बाधित किया हो, तो इससे न केवल आयात-निर्यात रुका, बल्कि कच्चे माल की आपूर्ति, शिल्प उद्योग, और रोजगार पर भी प्रभाव पड़ा। कोविड-19 महामारी में भी

यही देखने को मिला – अंतरराष्ट्रीय और घरेलू व्यापार कई महीनों तक ठप रहा, जिससे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला चरमरा गई।

2. स्वास्थ्य प्रणाली पर भार

प्राचीन समय में स्वास्थ्य व्यवस्था अत्यंत सीमित थी। यदि किसी नगर में महामारी फैलती थी, तो उसे नियंत्रित करने के संसाधनों का अभाव होता था। सिंधु सभ्यता की जल निकासी प्रणाली भले ही उन्नत थी, परंतु महामारी के समय उसमें भी संक्रमण का खतरा अधिक रहता था। इसी प्रकार, कोविड-19 महामारी के दौरान, विश्व की आधुनिकतम स्वास्थ्य प्रणालियाँ भी चरमरा गईं – अस्पतालों में जगह की कमी, चिकित्सा कर्मियों पर अत्यधिक दबाव, और जीवन रक्षक उपकरणों का अभाव जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हुईं।

3. सामाजिक दूरी और एकाकीकरण

कोविड-19 ने जिस प्रकार सामाजिक जीवन को प्रभावित किया, वैसा प्रभाव किसी प्राचीन महामारी के दौरान भी संभव रहा होगा। सामाजिक मेलजोल, धार्मिक अनुष्ठान, सामूहिक कार्य और शहरी सभ्यता की आत्मा – समुदाय – इन सभी पर बुरा असर पड़ा। सिंधु घाटी सभ्यता के नगरों में एक जैसे घरों की पंक्तियाँ और सार्वजनिक स्नानागार सामूहिक जीवन की गवाही देते हैं, परंतु महामारी के प्रसार ने संभवतः इस व्यवस्था को अस्थिर कर दिया होगा।

4. प्रवास की लहरें

महामारी के समय जनसंख्या का एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर पलायन एक सामान्य प्रवृत्ति रही है। कोविड-19 के दौरान भी भारत सहित अनेक देशों में विशाल प्रवासी श्रमिक वर्ग ने महानगरों से अपने गाँवों की ओर वापसी की। यही बात सिंधु घाटी सभ्यता पर भी लागू की जा सकती है। जैसे ही नगरीय व्यवस्था पर संकट आया, लोगों ने अपेक्षाकृत सुरक्षित ग्रामीण क्षेत्रों की ओर पलायन किया होगा।

कोविड-19 के समय बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूर अपने गांव लौटे। भारत जैसे देश में यह एक सामाजिक और आर्थिक संकट बन गया। इसी प्रकार सिंधु सभ्यता के पतन के बाद भी जनसंख्या का स्थानांतरण हुआ होगा, जो नए स्थानों की जलवायु, संस्कृति, और संसाधनों से अनभिज्ञ थे। यह संघर्ष सभ्यता के पतन का कारण बन सकता है।

वैश्विक सभ्यता और महामारी

"Sindhu Civilization was a Global Civilization." – यह कथन केवल एक ऐतिहासिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उस सभ्यता की उन्नत व्यापारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना की पुष्टि करता है। सिंधु घाटी सभ्यता (2600-1900 ई.पू.) अपने समय की एक समृद्ध, संगठित और अत्यंत वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाली नगरीय सभ्यता थी, जिसका व्यापार केवल भारतीय उपमहाद्वीप तक सीमित नहीं था, बल्कि मेसोपोटामिया, फारस की खाड़ी, मध्य एशिया और संभवतः अफ्रीकी तटों तक फैला हुआ था। मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे नगरों से प्राप्त व्यापारिक मुहरें, नावों के चित्र और विदेशी वस्तुओं की उपस्थिति यह दर्शाते हैं कि यह सभ्यता उस समय के अंतरमहाद्वीपीय व्यापार का सक्रिय हिस्सा थी। इस आधार पर इसे "प्राचीन वैश्विक सभ्यता" कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। यह वैश्विक जुड़ाव निश्चित रूप से उस समय की आर्थिक समृद्धि, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और तकनीकी नवाचारों का कारण बना, किंतु यह भी संभव है कि इसी संपर्क के माध्यम से जैविक संकट, संक्रामक रोग या महामारी भी फैली हो, जैसा कि आधुनिक इतिहास में कोविड-19 के रूप में देखा गया।

कोविड-19: आधुनिक वैश्विक जुड़ाव का प्रतिबिंब

कोविड-19 महामारी ने आधुनिक वैश्विक व्यवस्था की गहराई, जटिलता और आपसी निर्भरता को बड़े तीव्र रूप में उजागर किया। 2019 के अंत में चीन के वुहान शहर से शुरू होकर यह महामारी कुछ ही महीनों में संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले आई – यूरोप, अमेरिका, भारत, अफ्रीका, दक्षिण एशिया – कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्राएं, वैश्विक व्यापार, पर्यटन, शिक्षा और तकनीकी सहयोग के माध्यम से यह संक्रमण तेजी से फैला, जिससे स्पष्ट हुआ कि आज की वैश्विक दुनिया में कोई भी देश पूर्णतः अलग-थलग नहीं रह सकता।

वैश्विक संपर्क: लाभ और जोखिम दोनों

सिंधु घाटी और कोविड-19 के अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि वैश्विक संपर्क जितना सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से लाभदायक होता है, उतना ही यह जैविक और सुरक्षा संबंधी दृष्टिकोण से जोखिमपूर्ण भी हो सकता है। जब सभ्यताएं या देश एक-दूसरे से गहराई से

जुड़े होते हैं, तब एक क्षेत्र की समस्या संपूर्ण वैश्विक प्रणाली को प्रभावित कर सकती है। सिंधु घाटी के व्यापारिक बंदरगाहों और स्थलों से जुड़ी किसी महामारी ने यदि विदेशी माध्यमों से प्रवेश किया हो, तो इसका प्रभाव दूरगामी हो सकता था – ठीक वैसे ही जैसे कोविड-19 ने वैश्विक स्तर पर किया। यह भी स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण के युग में किसी संकट का समाधान भी वैश्विक सहयोग के बिना संभव नहीं। कोविड-19 के दौरान विश्व के विभिन्न देशों ने चिकित्सा अनुसंधान, वैक्सीन निर्माण, आपूर्ति श्रृंखला की पुनर्स्थापना और सूचना साझाकरण के माध्यम से मिलकर काम किया। इसी तरह, यदि प्राचीन सभ्यताओं के बीच भी कोई स्वास्थ्य संकट फैला होगा, तो उसका प्रभाव संपूर्ण व्यापारिक मार्गों और संस्कृति पर पड़ा होगा। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चाहे वह प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता हो या आधुनिक वैश्विक व्यवस्था – दोनों ने यह सिद्ध किया है कि जब सभ्यताएं वैश्विक होती हैं, तो उनके उत्थान और पतन दोनों ही वैश्विक कारकों से जुड़े होते हैं। महामारी जैसे जैविक संकट इस वैश्विक संरचना की सबसे बड़ी चुनौती बन सकते हैं, और हमें भविष्य में एक संतुलित, सतर्क और सहयोगपूर्ण वैश्विक दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी।

इतिहास लेखन की पुनर्व्याख्या की आवश्यकता

"We have great need to define history with this perspective that the decline of civilization affected by pandemics."

इतिहास लेखन में महामारी और अन्य जैविक घटनाओं की उपेक्षा की गई है। कोविड-19 के अनुभव से यह स्पष्ट होता है कि यदि इतिहास को समग्रता से समझना है तो हमें सामाजिक, जैविक और पर्यावरणीय संकटों को भी उसके अध्ययन में सम्मिलित करना होगा।

निष्कर्ष

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन और कोविड-19 महामारी – इन दोनों ऐतिहासिक घटनाओं का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि महामारी जैसी जैविक आपदाएं केवल स्वास्थ्य से संबंधित संकट नहीं होतीं, बल्कि वे सम्पूर्ण सभ्यता की नींव को हिला सकती हैं। इन दोनों घटनाओं ने यह प्रमाणित किया है कि जब मानव समाज पर कोई जैविक संकट आता है, तो वह न केवल जनसंख्या को प्रभावित करता है, बल्कि सामाजिक ढांचे, आर्थिक तंत्र, धार्मिक आस्थाओं, सांस्कृतिक आदानों-प्रदानों और राजनीतिक व्यवस्थाओं को भी गहराई से विचलित कर देता है। सिंधु घाटी जैसे समृद्ध और सुव्यवस्थित सभ्यता का अचानक लुप्त हो जाना केवल भौगोलिक या राजनैतिक कारणों से नहीं हुआ होगा, बल्कि महामारी और जैविक संकटों जैसे अदृश्य परंतु प्रभावशाली कारकों ने भी इसमें निर्णायक भूमिका निभाई होगी। ठीक इसी प्रकार, कोविड-19 ने आधुनिक सभ्यता, जो तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण की चरम स्थिति पर थी, को असहाय कर दिया। इस महामारी ने न केवल मानव जीवन की नाजुकता को उजागर किया, बल्कि यह भी दिखाया कि हम अपनी सामाजिक संरचना, आर्थिक प्रणाली और वैश्विक नेटवर्किंग में कितने असंतुलित हो चुके हैं। इस अनुभव से यह स्पष्ट होता है कि भविष्य के इतिहास लेखन में केवल राजनीतिक घटनाओं, युद्धों और शासकों की गाथाओं तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं है। अब आवश्यकता इस बात की है कि इतिहास लेखन के स्वरूप में एक समावेशी दृष्टिकोण अपनाया जाए, जिसमें महामारी, जलवायु परिवर्तन, जैविक आपदाएं, सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट, और सामाजिक संरचना पर उनके प्रभावों को गंभीरता से स्थान दिया जाए। इतिहास केवल अतीत का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए सीखने का माध्यम भी है। कोविड-19 जैसी आपदाएं हमें यह अवसर देती हैं कि हम अतीत की भूलों को समझें, सभ्यताओं के पतन से सीखें, और आने वाले समय के लिए अधिक सुदृढ़, उत्तरदायी और संवेदनशील समाज का निर्माण करें। इस संदर्भ में सिंधु घाटी सभ्यता का पुनरावलोकन और कोविड-19 का समकालीन अनुभव, दोनों ही इतिहासकारों, समाजशास्त्रियों और नीति-निर्माताओं के लिए एक आवश्यक चेतावनी और मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

संदर्भ (References)

1. Thapar R. Early India: From the Origins to AD 1300. London: Penguin Books; c2003.
2. Possehl GL. The Indus Civilization: A Contemporary Perspective. Walnut Creek (CA): Rowman Altamira; c2002.
3. Lal BB. The Saraswati Flows On. New Delhi: Aryan Books International; c2002.
4. Kenoyer JM. Ancient Cities of the Indus Valley Civilization. Karachi: Oxford University Press; c1998.
5. Acemoglu D, Robinson J. Why Nations Fail. New York: Crown Business; c2012.

6. Diamond J. Collapse: How Societies Choose to Fail or Succeed. London: Penguin; c2005.
7. Turchin P. War and Peace and War: The Life Cycles of Imperial Nations. New York: Pi Press; c2006.
8. Snowden F. Epidemics and Society: From the Black Death to the Present. New Haven: Yale University Press; c2019.
9. Morens DM, Fauci AS. Emerging pandemic diseases: how we got to COVID-19. Cell. 2020;182(5):1077-92.
10. World Health Organization (WHO). Impact of COVID-19 on Global Health Systems. Geneva: WHO; c2020-2023.
11. Das V. Critical Events: An Anthropological Perspective on Contemporary India. New Delhi: Oxford University Press; c1995.
12. Ali D. The concept of historical decline in India. Mediev Hist J. 2005;8(1):163-195.
13. Chanda N. Bound Together: How Traders, Preachers, Adventurers, and Warriors Shaped Globalization. New Haven: Yale University Press; c2007.
14. Habib I. A People's History of India. New Delhi: Tulika Books; c2001.
15. Bose S, Jalal A. Modern South Asia: History, Culture, Political Economy. 2nd ed. London: Routledge; c2011.
16. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India. India's COVID-19 Report. New Delhi: MoHFW; c2021.
17. National Center for Biotechnology Information (NCBI). Pandemic and migration in India. J Migr Stud. 2021;3(2):45-60.
18. United Nations Development Programme (UNDP). The Socioeconomic Impact of COVID-19 in India. New York: UNDP; c2020.
19. Foucault M. The Birth of the Clinic. New York: Vintage Books; c1994.
20. Harari YN. Homo Deus: A Brief History of Tomorrow. New York: Harper; c2017.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.